चतुर्थः पाठः

दूरदृष्टिः फलप्रदा

जीवने दूरदृष्टिं विना सफलता न लभ्यते। प्रायः वयं तात्कालिकं सुखमेव पश्यामः येन अनेकानि कष्टानि आपतन्ति। यः जनः दूरदर्शी भवति, सः सर्वान् पक्षान् विपक्षान् गणयित्वा निर्णयं करोति। पञ्चतन्त्रे विष्णुशर्मा मत्स्यानाम् उदाहरणेन राजपुत्रान् एतदेव शिक्षयितुं प्रयत्नं करोति। अत्र अनागतविधाता नामकः मत्स्यः विपत्तेः निराकरणस्य उपायं चिन्तयति, प्रत्युत्पन्नमतिः शीघ्रमेव निर्णयं कृत्वा आत्मरक्षां करोति, परन्तु यद्भविष्यः भविष्यम् आश्रित्य कथं विनश्यति इति प्रस्तूयते अस्यां कथायाम्।

शब्दार्थः— न लभ्यते—प्राप्त नहीं होतीं। **प्रायः**—अक्सर। **तात्कालिकम् सुखम्**—उसी समय के सुख को। **आपतन्ति**—आ पड़ते हैं। **पक्षान्**—पहलुओं को। **विपक्षान्**—प्रतिकूल पहलुओं को। **गणयित्वा**—गिनकर। **मत्स्यानाम्**—मच्छों के। **राजपुत्रान्**—राजकुमारों को। **एतत् एव**—यही। **शिक्षयितुम्**—सिखाने के लिए। **विपत्तेः**—संकट के। **निराकरणस्य**—दूर करने का। **चिन्तयति**—सोच लेता है। **कृत्वा**—करके। **आत्मरक्षाम्**—अपनी रक्षा। **आश्रित्य**—सहारा लेकर। **विनश्यति**—नष्ट हो जाता है। **प्रस्तूयते**—प्रस्तुत किया जाता है।

सरलार्थ— जीवन में दूरदृष्टि के बिना सफलता प्राप्त नहीं होती। अक्सर हम उसी समय के सुख को ही देखते हैं जिससे (हम पर) अनेक संकट आ पड़ते हैं। जो मनुष्य दूरदर्शी होता है, वह सारे पक्षों (पहलुओं) और विपक्षों (प्रतिकूल पक्षों) को गिनकर फैसला कर लेता है। पंचतंत्र में विष्णु शर्मा मच्छों के उदाहरण द्वारा राजकुमारों को यही (बात) समझाने का प्रयास करता है। यहाँ अनगातविधाता नामक मच्छ विपत्ति को दूर करने का उपाय सोच लेता है, प्रत्युत्पन्नमति तुरन्त ही निर्णय करके अपनी रक्षा कर लेता है, परन्तु यद्भविष्य का अवलम्ब लेकिर किस प्रकार नष्ट हो जाता है—यह (सब-कुछ) इस कहानी में प्रस्तुत किया जा रहा है।

कस्मिंश्चित् जलाशये अनागतविधाता प्रत्युत्पन्नमतिः यद्भविष्यश्च इति त्रयो मत्स्याः प्रतिवसन्ति स्म। अथ कदाचित् तं जलाशयं दृष्ट्वा गच्छद्भिः मत्स्यजीविभिः उक्तम्-"अहो, बहुमत्स्योऽयं ह्रदः कदापि न अस्माभिः अन्वेषितः। अद्य तु आहारवृत्तिः सञ्जाता। सन्ध्यासमयः अपि संवृत्तः। ततः प्रभाते अत्र आगन्तव्यम् इति निश्चयः।"

शब्दार्थः, पर्यायवाचिशब्दाः टिप्पण्यश्च— **कस्मिंश्चित्**—कस्मिन्नपि, किसी। **जलाशये**—सरसि, सरोवर में। **अनागता-विधाता**—अनागतस्य विधाता, षष्ठी तत्पुरुष, अनागतस्य भयस्य प्रतिकर्ता, संकट के आने से पहले ही प्रतिकार करने वाला, मत्स्य का नाम जो उसके गुण, स्वभाव के अनुरूप है। **प्रत्युपन्नमतिः**—प्रत्युत्पन्नामति—यस्य सः, बहुव्रीही, प्रतिकर्तुं तत्परः, तत्परता से उपाय करने वाला। **यद्भविष्यः**—भविष्यं प्रति निश्चिन्तः, भविष्य के प्रति निश्चिन्त, भाग्यवादी। **त्रयः**—त्रिसंख्यकाः, तीन। **मत्स्याः**—मच्छ। **प्रतिवसन्ति स्म**—निवसन्ति स्म रहते थे। **अथ**—तदनन्तर, उसके बाद। **कदाचित्**—कदापि, कभी, कास्मिन्नापि समये। **तं जलाशयं**—तत्सरः, उस तालाब को। **द्रष्ट्रवा**—अवलोक्य, अवेक्ष्य, देखकर। **गच्छद्भिः**—गमनं कुवद्भिः, जाते हुए, व्रजदभिः। **मत्स्यजीविभिः**—मत्स्यैः जीवन्ति, तैः मत्स्याजी[illegible], मछुआरों से। **उक्तम्**—कथितम्, कहा गया। **अहो**—विस्मयादिकबोधकः अव्ययः। आश्चर्य प्रगट करने वाला अव्यय, अरे! **बहुमत्स्यः**—बहवः मत्स्याः यस्मिन् सः, प्रभूतमीनः, बहुत मछलियों वाला। **अयं**—एषः, यह। **ह्रदः**—जलाशयः, तालाब। **अन्वेषितः**—अनु + आ + इषू + णिचू + क्त, गवेषितः, विलोकितः, देखा गया। **अद्य**—वर्तमानदिने, आज। **आहारवृत्ति**—आहारस्य वृत्तिः, षष्ठी तत्पुरुषः, भोजन प्रबन्ध, भोजन की व्यवस्था, **सञ्जाता**—सम्पन्ना, हो गई। **सन्ध्यासमयः**—सायंकालः शाम का समय। **संवृत्त**—संजातः, हो गया। **ततः तस्मात्**—आरम्भ अब इसके बाद। **प्रभाते**—प्रातःकाले, सुबह। **अत्र**—अस्मिन् स्थाने, इस जगह। **आगन्तव्यम्**—आ + गम् + तव्यत्, आना चाहिए। **इति**—एषः, यह। **निश्चय**—संकल्पः, इरादा।

भावार्थ— आहारार्थी आहारस्य सम्भावनां दृष्ट्वा तदर्थं निश्चयं करोति। भावि-सङ्कटस्य सङ्केत दृष्ट्वा तस्य उपायोऽपि चिन्तनीयः।

किसी स्थान के निवासियों को उन पर आनेवाले संकट का संकेत पहले ही दे दिया गया है। वहाँ के निवासी विविध विचार, गुण तथा स्वभाव वाले थे। भविष्य में क्या होगा? यह उत्सुकता दिखाकर कथांश को रोचक बनाया गया है।

प्रसंग— प्रस्तुत कथांश 'दूरदृष्टिः फलप्रदा' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। मूलतः यह पाठ विष्णुशर्मा विरचित 'पञ्चतन्त्र' से लिया गया है। इस अनुच्छेद में मछुआरों द्वारा किसी जलाशय में सायंकाल मछलियों को देखकर उन्हें अगले दिन अपना आहार बनाने का निश्चय किए जाने का उल्लेख है।

सरलार्थ— किसी तालाब में अनागतविधाता, प्रत्युत्पन्नमति तथा यद्भविष्य नाम की तीन मछलियाँ रहती थीं। तत्पश्चात् किसी समय उस तालाब को देखकर जाते हुए मछुआरों ने कहा—'अरे, बहुत मछलियों वाला तालाब हमारे द्वारा पहले नहीं देखा गया (खोजा गया)। आज की भोजन की व्यवस्था तो हो चुकी है। शाम का समय भी हो गया है। इसके बाद हमें प्रातःकाल यहाँ आना चाहिए। यही हमारा संकल्प है।

तेषां तत् कुलिशपातोपमं वचः समाकर्ण्य अनागतविधाता सर्वान् मत्स्यान् आहूय इदम् अवदत्—अहो! श्रुतं भवद्भिः यत् मत्स्यजीविभिः अभिहितम्? तद् रात्रावपि गम्यतां किञ्चित् निकटं सरः। उक्तं च—

अशक्तैर्बलिनः शत्रोः कर्तव्यं प्रपलायनम्।
आश्रितव्योऽथवा दुर्गः नान्या तेषां गतिर्भवेत्।। 1।।

अन्वयः— अशक्तैः बलिनः शत्रोः प्रलायनं कर्तव्यम् अथवा दुर्गः आश्रितव्यः, तेषाम् अन्या गतिः न भवेत्।

शब्दार्थः, पर्यायवाचिशब्दाः टिप्पण्यश्च— **तेषाम्**—मत्स्यजीविनाम्, उन मछुआरों के। **तत्**—उपर्युक्तम्, ऊपर कहे गए उस। **कुलिश**—वज्रम, वज्र। **पात**—निपात, गिरने के। **उपमम्**—सदृशम्, सदृश, समान। **वचः**—वचनम्, कथन को। **समाकर्ण्य**—श्रुत्वा, सुनकर। **अनागतविधाता**—भविष्यप्रतिकर्ता, भविष्य का उपाय करने वाले। **सर्वान्**—सम्पूर्णात्। **मत्स्यान्**—जलचरान्, मछलियों के। **आहूय**—आह्वानं कृत्वा, बुलाकर। **इदम्**—एतादृशम्, इस। **अवदत्**—निवेदनमकरोत, निवेदन किया, कहा। **अहो**—अरे। **क्षुतम्**—आकर्णितम् स[illegible]। **अस्मभिः**—हमारे द्वारा। **यत्**—कि। **मत्स्यजीवीभिः**—मत्स्यजीवैः, मछुआरों द्वारा? **अभिहितम्**—कथितम् कथन। **तद्**—तत्, ता[illegible]**त्रावपि**—रात्रौ एव, रात में ही। **गम्यताम्**—गन्तव्यम्, जाना चाहिए। **किञ्चित्**—कञ्चित्, किसी। **निकट्म**—सपीमस्थम्, निक[illegible]वर्ती। **सरः**—जलाशय। **उक्तं च**—और कहा गया है, कथितं च।

श्लोकार्थः— अशक्तैः—असमर्थै शक्तिहीनैः, दुर्बल। **बालिनः**—बलशालिभ्यः, बलवान। **शत्रोः**—रिपोः, शत्रु से। **प्रपलायनम्**—दूर पलायन, भागना। **कर्तव्यम्-करणीयम्**—करना चाहिए। **अथवा**—वा, या। **दुर्गः**—सरक्षितः दुर्गमः स्थानविशेषः। **आश्रितव्यः**—आश्रय स्वीकर्तव्यः, आश्रय स्वीकार करना चाहिए। **तेषां**—अशक्तानाम्, अशक्तों की। **अन्या**—तृतीया, तीसरी। **गतिः**—अवस्था, उपाय। **नास्ति**—न वर्तते, नहीं है।

भावार्थ— नीतिम् आश्रित्य जनः स्वरक्षायाः उपायान् चिन्तयति।

प्रसंग— अनुबन्ध तथा पद्य हमारी पाठ्यपुस्तक 'ऋतिका' के 'दूरदृष्टिः फलप्रदा' पाठ से लिया गया है। इसमें मछुआरों का कथन सुनने के बाद सुरक्षित स्थान पर चले जाने के बारे में मछलियों द्वारा विचार किया जा रहा है।

सरलार्थ— उस (मछुआरों के। उस वज्र से गिरने के समान विनाशकारी) कथन को सुनकर आए संकट पर दूरदृष्टि से विचार करने वाले मत्स्य ने शेष सब मछलियों को बुलाकर यह कहा—'अरे, आप सबके द्वारा मछुआरों द्वारा कहा गया कथन सुना गया है। तो रात में ही किसी पास के तालाब पर चले जाना चाहिए। कहा भी गया है—शक्तिशाली शत्रु से शक्तिहीनों को दूर भाग जाना चाहिए अथवा किसी सुरक्षित दुर्ग का आश्रय लेना चाहिए। इसके अतिरिक्त उनके लिए और कोई गति (रास्ता, चारा, विकल्प) नहीं है।

तन्नूनं प्रभातसमये मत्स्यजीवनः अत्र समागत्य मत्स्यसंक्षयं करिष्यन्ति। तन्न युक्तं साम्प्रतं क्षणमप्यत्र अवस्थातुम्। उक्तं च—

विद्यमाना गतिः येषामन्यत्रापि सुखावहा।
ते न पश्यन्ति विद्वांसो देहभङ्गं कुलक्षयम्।। 2।।

अन्वयः— येषाम् अन्यत्र अपि सुखा वहा गतिः विद्यमाना, ते विद्वांसः देहभङ्गं, कुलक्षयं न पश्यन्ति।

शब्दार्थः, पर्यायवाचिशब्दाः टिप्पण्यश्च— तन्नूनं—तत् + नूनम्। **नूनम्**—निश्चयेन, निश्चय से। **प्रभातसमये**—प्रातः काले, सवेरे। **मत्स्यजीविनः**—मत्स्यजीविन्, प्रथमा विभक्तिः, बहुवचनम्, मछुआरे। **अत्र**—एतत् स्थानम्, यहाँ। **समागत्य**—सम्यक् आगत्य, अच्छी तरह आकर। **मत्स्यसंक्षयम्**—मत्स्यानां संक्षयम् विनाशम्, मछलियों का विनाश। **करिष्यन्ति**—विधास्यन्ति, करेंगे। **तन्न**—तत् न, तो नहीं। **युक्तम्**—योग्यम्, उचित। **साम्प्रतम्**—अधुनैव, अभी। **क्षणमप्यत्र**—क्षणम् + अपि + अत्र = क्षणमात्रम् अपि अस्मिन् स्थाने। **अवस्थातुम**—अवस्थानं, रुकना। **उक्तं**—कथितम्। **येषाम्**—येषां प्राणिनाम्, जिन जीवों की। **अन्यत्र**—अन्यस्मिन् स्थाने, अन्य स्थान पर। **अपि**—भी। **विद्यमाना**—विद् + शानच वर्तमाना। **ते**—एते, वे। **विद्वांसः**—बुद्धिमन्तः, ज्ञानवन्त, ज्ञानवान्। **देहभङ्गम्**—देहस्य भङ्ग, तम्, देहविनाशम्, शरीर के नाश को। **कुलक्षयम्**—कुलस्यक्षयम्, विनाशम्, कुल के विनाश को। **न पश्यन्ति**—नहि उद्वीक्षन्ते, नहीं देखते।

भावार्थ— विद्वांसः सुखदाम् अवस्थां दृष्ट्वा तां स्वीकुर्वन्ति, तेषाम् शरीरहानिः कुलहानिः च न भवतः।

प्रसंग— अनुबन्ध तथा पद्य हमारी पाठ्यपुस्तक 'ऋतिका' के 'दूरदृष्टिः फलप्रदा' पाठ से लिया गया है। मूलतः विष्णुशर्मा के पञ्चतन्त्र से संकलित इस कथा में दूरदृष्टि का लाभ बताया गया है। प्रस्तुत सन्दर्भ में अनागतविधाता अपने पूर्वोक्त कथन को यहाँ पूर्ण करता है कि यहाँ क्षण भर भी रूकना कुलनाश के समान है।

सरलार्थ— तो निश्चय ही प्रातः काले मछुआरे यहाँ आकर मछलियों का सम्पूर्ण विनाश करेंगे। अतः यह सब यहाँ क्षण भर ही ठहरना कदापि ठीक नहीं है। कहीं भी है— जिनके लिए किसी दूसरी जगह भी सुखदायी अन्य गति (विकल्प) है वे विद्वान अपने शरीरनाश तथा कुलनाश को होता हुआ नहीं देखते हैं अर्थात् उनके शरीर का व कुल नाश नहीं होता।

तदाकर्ण्य प्रत्युत्पन्नमतिः प्राह-अहो! सत्यमभिहितं भवता। ममापि अभीष्टमेतत्। तदन्यत्र गम्यताम् इति।

अथ तत् समाकर्ण्य उच्चैः विहस्य यद्भविष्यः उवाच—अहो! भवद्भ्यां न सम्यग् मन्त्रितं इति। किं व [illegible] त्रेणापि पितृपैतामहिकम् एतत् सरः त्यक्तुं युज्यते? आयुः क्षयोऽस्ति चेत्, अन्यत्रगतानामपि मृत्युः भविष्यति एव। उक्तं

शब्दार्थः, पर्यायवाचिशब्दाः टिप्पण्यश्च— तदाकर्ण्य—तत् + आकर्ण्य, तत् श्रुत्वा, उसे सुनकर। **प्रत्युत्पन्न[illegible]**—शीघ्रं प्रतिकर्ता, शीघ्र प्रतिकार करने वाला मच्छ। **आह**—अवदत्, बोला। **सत्यम्**—तथ्ययुक्तम्, सच। **उक्तम्**—कार्यतम्, कहा गया है। **भवताः**—त्वया। **मम**—मरमकीनः, मेरा। **अभीष्टम्**—निश्चयः, निश्चय। **तदन्यत्र**—तत् +अन्यत्र, तो दूसरी जगह। **गम्यताम्**—गन्तव्यम्, जाना चाहिए। **अय**—तदनन्तरं, उसके बाद। **तत् समाकर्ण्य**—प्रत्युत्पन्नमतेः वचनं क्षुत्वा, प्रत्युतपन्नमति के कथन को सुनकर।

उच्चैः—उच्च स्वरेण, ऊँचे स्वर में। **विहस्य**—हसित्वा, हँसकर। **यद्भविष्यः**—भाग्यवादी। **उवाच**—कथितवान्, कहा। **अहो**—अरे। **भवद्भ्याम्**—उभाभ्याम्, आप दोनों के द्वारा। **न**—नहीं। **सम्यक्**—उचितम्। **मन्त्रितम्**—विचारितम्, विचार किया गया। **वाङ्मात्रेण**—वाचा एव, केवल वाणी द्वारा कहे जाने से। **पितृ पैतामहिकम्**—पितृपितामह + ठक्, पितृपितामह परम्परा प्राप्तम्, बाप-दादों की सम्पत्ति को। **एततः सरः**—एतां जलाशयं, इस तालाब को। **व्यक्तुं युज्यते**—त्यागः उचितः। **आयुः क्षयः**—आयुषः नाशः, आयु का नाश। **चेत**—यदि, अगर। **अन्यत्र गतानाम्**—अन्यस्थानं प्राप्तनाम्, दूसरी जगह पहुँचे हुओं की। **मृत्युः**—विनाशः, मौत। **भविष्यति एव**—होगी ही।

भावार्थ— भाग्यवादी पूर्णतः भाग्यम् अवलम्बते, अतः उद्यमनं करोति।

प्रसंग— प्रस्तुत पद्य 'दूरदृष्टिः फलप्रदा' नामक पाठ से लिया गया है। इसमें यद्भविष्य अपना विचार बता रहा है।

सरलार्थ— उसे सुनकर प्रत्युत्पन्नमति (हाजिरजवाब) ने कहा—अरे, आपने सच कहा है। यह मेरा भी मत है। तो हमें दूसरी जगह जाना ही चाहिए।

तदनन्तर उसे सुनकर ऊँचे स्वर में यद्भविष्य ने कहा—अरे आप दोनों ने ठीक से विचार नहीं किया। क्या वणी मात्र से ही बाप-दादों का यह तालाब छोड़ा जा सकता है? अगर किसी की आयु कम (क्षीण) है तो दूसरी जगह जाने पर भी मृत्यु आएगी ही। कहा गया है—

अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितं
सुरक्षितं दैवहतं विनश्यति।
जीवत्यनाथोऽपि वने विसर्जितः
कृतप्रयत्नोऽपि गृहे न जीवति।। 3।।

अन्वयः— अरक्षितम् दैवरक्षितम् तिष्ठति सुरक्षितम् दैवहतं विनश्यति। अनाथः वने विसर्जितः अपि जीवति, कृतप्रयत्नः गृहे अपि न जीवति।

शब्दार्थः, पर्यायवाचिशब्दाः टिप्पण्यश्च— अरक्षितम्—न रक्षितम्, नञ् तत्पुरुषः, न रक्षा किया हुआ। **दैवरक्षितम्**—दैवेन, रक्षितम्, भाग्य द्वारा रक्षा किया हुआ। **दैवहतं**—दैवेन हतम्, दुर्भाग्येन विनाशितम्, भाग्य का मारा। **कृतप्रयत्नः**—कृतः प्रयत्नः येन सः, कृतप्रयासः, यत्न करने पर भी। **न जीवतिः**—रक्षितः न भवति, जीवित नहीं रहता। **अनाथः**—न नाथः यस्य सः, असहाय। **विसर्जितः**—त्यक्तः, छोड़ा गया।

भावार्थ— भाग्यवादी मन्यते यत् प्राणिनः रक्षा, विनाशः च भाग्यस्य परिणामेन भवतः।

प्रसंग— प्रस्तुत पद्य 'दूरदृष्टिः फलप्रदा' नामक पाठ से लिया गया है। इसमें यद्भविष्य अपना विचार दे रहा है।

सरलार्थ— जिसकी रक्षा नहीं की गई, भाग्य उसकी रक्षा कर देता है (और उसे कुछ हानि नहीं होती)। जिसकी अच्छी तरह .रक्षा की ग़ई, वह (बेचारा) भाग्य का मारा नष्ट हो जाता है। वन में छोड़ा गया असहाय जन भी जीवित रहता है तथा घर में रहनेवाला प्रयत्न करने पर भी जीवित नहीं बचता।

जीवन और मरण भाग्य पर आश्रित हैं, पौरुष पर कदापि नहीं। यह यद्भविष्य (भाग्यवादी) का तर्कसंगत विचार है।

तदहं न गच्छामि। भवद्भ्यां यत् प्रतिभाति, तत् कर्तव्यम्। अथ तस्य तं निश्चयं ज्ञात्वा अनागतविधाता प्रत्युत्पन्नमतिश्च निष्क्रान्तौ सह परिजनेन। अथ प्रभाते तैः मत्स्यजीविभिः जालैस्तं जलाशयम् आलोड्य यद्भविष्येण सह तत् सरो निर्मत्स्यतां नीतम्।

शब्दार्थः, पर्यायवाचिशब्दाः टिप्पण्यश्च— परिजनेन—परिवारे सह, परिवार के साथ। **आलोड्य**—आ + लोड् + क्य, आलोडन कर, मथकर। **निर्मत्स्यतां नीतम्**—निर् + मत्स्य + तल्, मत्स्यहीनः कृतः, मछली रहित कर दिया गया। **निष्क्रान्तौ**—निस् + √क्रम् + क्त, द्विवचन। **जालैस्तं**—जालै + तं।

भावार्थ— उद्यमं विना भाग्यवादी विनाशम् अधिगच्छति।

प्रसंग— प्रस्तुत अनुबन्ध पाठ्यपुस्तक के 'दूरदृष्टिः फलप्रदा' पाठ के अन्तिम भाग से लिया गया है। यद्भविष्य तर्क देकर **वहीं रहने का** निर्णय करता है। परिणामस्वरूप दूरदृष्टि न होने से उसके कुल का नाश हो जाता है।

सरलार्थ— (यद्भविष्य मत्स्य ने कहा) तो मैं नहीं जाऊँगा। आप दोनों को जो भाता है (ठीक लगता है) वह करो। उसके बाद उसके उस निश्चय को जानकर अनागतविधाता तथा प्रत्युपन्नमति दोनों परिवार सहित (वहाँ से) निकल गये। तदनन्तर प्रातः उन मछुआरों के द्वारा जालों से उस तालाब के पानी को मथकर (आलोडन कर) यद्भविष्य सहित सारे तालाब को मछलियों से रहित कर दिया गया।

अनुप्रयुक्त-व्याकरणम्

पाठाधारिताः सन्धिविच्छेदाः

कस्मिंश्चित्	=	कस्मिन् + चित्	**जलाशये**	=	जल + आशये
प्रत्युत्पन्नमतिः	=	प्रति + उत्पन्नमतिः	**यद्भविष्यश्च**	=	यत् + भविष्यः + च
त्रयो मत्स्याः	=	त्रयः + मत्स्याः	**मत्स्योऽयम्**	=	मत्स्यः + अयम्
कदापि	=	कदा + अपि	**अन्वेषितः**	=	अनु + एषितः
संजाता	=	सम् + जाता	**निश्चयः**	=	निः + चयः
पातोपमम्	=	पात + उपमम्	**समाकर्ण्य**	=	सम् + आकर्ण्य
तद् रात्रावपि	=	तत् + रात्रौ + अपि	**किञ्चित्**	=	किम् + चित्
अशक्तैर्बलिनः	=	अशक्तैः + बलिनः	**पलायनम्**	=	पला + अयनम्
अश्रितव्योऽथवा	=	आश्रितव्यः + अथवा	**नान्या**	=	न + अन्या
गतिर्भवेत्	=	गतिः + भवेत्	**तन्नूनम्**	=	तत् + नूनम्
समागत्य	=	सम् + आगत्य	**तन्न**	=	तत् + न
क्षणमप्यत्र	=	क्षणम् + अपि + अत्र	**सुखावहा**	=	सुख + आवहा
येषामन्यत्रापि	=	येषाम् + अन्यत्र + अपि	**तदाकर्ण्य**	=	तत् + आकर्ण्य
विद्वांसो देहभंगम्	=	विद्वांसः + देहभंगम्	**प्राह**	=	प्र + आह
सत्यमभिहितम्	=	सत्यम् + अभिहितम्	**ममापि**	=	मम + अपि
अभीष्टमेतत्	=	अभि + इष्टम् + एतत्	**तदन्यत्र**	=	तत् + अन्यत्र
सम्यग् मन्त्रितम्	=	सम्यक् + मन्त्रितम्	**क्षयोऽस्ति**	=	क्षयः + अस्ति
वाङ्मात्रेणापि	=	वाक् + मात्रेण + अपि	**प्रयत्नोऽपि**	=	प्रयत्नः + अपि
जीवत्यनाथोऽपि	=	जीवतिं + अनाथः + अपि	**तदहम्**	=	तत् + अहम्
प्रत्युत्पन्नमतिश्च	=	प्रति + उत्पन्नमतिः + च	**निष्क्रान्तौ**	=	निः + क्रान्तौ
सरो निर्मत्स्यताम्	=	सरः + निः + मत्स्यताम्	**जालैस्तम्**	=	जालैः + तम्

पाठाधारिताः समासविग्रहाः

समस्तपदानिं	**विग्रहाः**	**समास-नाम**
जलाशये	जलस्य आशयः, तस्मिन	षष्ठी तत्पुरुषः
अनागतविधाता	न आगतम्, अनागतम्	नञ् तत्पुरुषः
	— अनागतस्य विधाता	षष्ठी तत्पुरुषः
प्रत्युत्पन्नमतिः	प्रत्युत्पन्ना मतिः यस्य सः	बहुव्रीहिः
मत्स्यजीविभिः	मत्स्यैः जीवन्ति इति	
	— मत्स्यजीविनः, तैः	उपपदतत्पुरुषः
बहुमत्स्यः	बहवः मत्स्याः यस्मिन् सः	बहुव्रीहिः
आहारवृत्ति	आहारस्य वृत्तिः	षष्ठी तत्पुरुषः

सन्ध्यासमयः	सन्ध्यायाः समयः	षष्ठी तत्पुरुषः
कुलिशपातोपमम्	– कुलिशस्य पातः कुलिशपातः	षष्ठी तत्पुरुषः
	– कुलिशपातेन उपमा यस्य तत्	बहुव्रीहिः
अशक्तैः	न शक्ताः अशक्ताः, तैः	नञ् तत्पुरुषः
प्रभातसमये	प्रभातस्य समयः, तस्मिन्	षष्ठी तत्पुरुषः
मत्स्यसंक्षयम्	मत्स्यानां संक्षयः, तम्	षष्ठी तत्पुरुषः
सुखावहा	सुखम् आवहति इति	उपपदतत्पुरुषः
देह-भङ्.गम्	देहस्य भङ्गः, तम्	षष्ठी तत्पुरुषः
कुलक्षयम्	कुलस्य क्षयः, तम्	षष्ठी तत्पुरुषः
अरक्षितम्	नरक्षितम्	नञ तत्पुरुषः
दैवरक्षितम्	दैवेन रक्षितम्	तृतीया तत्पुरुषः
अनाथः	न अस्ति नाथः यस्य सः	बहुव्रीहिः
कृतप्रयत्नः	कृतः प्रयत्नः येन सः	बहुव्रीहिः
जलाशयम्	जलस्य आशयः तम्	षष्ठी तत्पुरुषः

अनुप्रयोगस्य प्रश्नोत्तराणि

प्रश्न 1. अधोलिखितानां शब्दानां शुद्धम् उच्चारणाभ्यासं कुरुत सञ्चिकायां च लिखत—

कस्मिंश्चित्	पितृपैतामहिकम्
प्रत्युत्पन्नमतिः	गच्छद्भिः
मत्स्यसंक्षयम्	ह्रदः
रात्रावपि	प्रोच्चैः
कुलक्षयम्	निर्मत्स्यताम्।

उत्तरम्— टिप्पणी—छात्र इन शब्दों को कॉपी पर अवश्य लिखें। उच्चारण में शुद्धि का ध्यान रखें।

प्रश्न 2. कक्षायां छात्राः वर्गद्वये विभक्ताः भवेयुः—

कालिदासवर्गः भासवर्गः च। कालिदासवर्गस्य प्रश्नानाम् उत्तराणि भासवर्गः, भासवर्गस्य प्रश्नानाम्, उत्तराणि कालिदासवर्गः एकपदेन दास्यति—

	कालिदासवर्गः	**भासवर्गः**
(क) जलाशये कति मत्स्याः प्रतिवसन्ति स्म?	....	....
(ख) प्रभातसमये के आगत्य मत्स्यविनाशं करिष्यन्ति?	....	....
(ग) क्षारं जलं के पिबन्ति?	....	....
(घ) यद्भविष्यः कीदृशं सरः त्यक्तुं न इच्छति?	....	....
(ङ) कः आसीत् बहुमत्स्यः?	....	....
(च) सुरक्षितः कथं विनश्यति?	....	....
(छ) कुत्र विसर्जितः अनाथः अपि जीवति?	....	....
(ज) यः मत्स्यः जलाशयं न त्यजति, तस्य नाम किम्?	....	....
(झ) ह्रदः कैः निर्मत्स्यतां नीतः?	....	....
(ञ) मत्स्यजीविनः जालैः कस्य आलोडनं कृतवन्तः?	....	....

उत्तरम्—

कालिदासवर्गः	भासवर्गः
(ख) मत्स्यजीविनः	(क) बहुमत्स्याः/बहवः
(घ) पितृपैतामहिकं	(ग) मत्स्याः
(च) दैवहतः	(ङ) जलाशयः
(ज) यद्भविष्यः	(छ) वने
(ञ) जलाशयस्य	(झ) मत्स्यजीविभिः

प्रश्न 3. निम्नलिखितवाक्येषु स्थूलानि सर्वनामपदानि कस्मै प्रयुक्तानि?

(क) **अस्माभिः** कदाचिदपि अयं ह्रदः न अन्वेषितः।	....
(ख) प्रत्युत्पन्नमतिः प्राह—अहो **भवता** सत्यम् उक्तम्।	....
(ग) अहो श्रुतं **भवद्भिः** यत् मत्स्यजीविभिः कथितम्।	....
(घ) **मम** अपि अभीष्टमेतत्।	....
(ङ) **तस्य** निश्चयं ज्ञात्वा अनागतविधाता प्रत्युत्पन्नमतिश्च ततः निष्क्रान्तौ।	....

उत्तरम्—

(क) **अस्माभिः** कदाचिदपि अयं ह्रदः न अन्वेषितः।	मत्स्यजीविभिः।
(ख) प्रत्युत्पन्नमतिः प्राह—अहो **भवता** सत्यम् उक्तम्।	अनागतविधाता।
(ग) अहो श्रुतं **भवद्भिः** यत् मत्स्यजीविभिः कथितम्।	मत्स्यैः
(घ) **मम** अपि अभीष्टमेतत्।	प्रत्युत्पन्नमतेः
(ङ) **तस्य** निश्चयं ज्ञात्वा अनागतविधाता प्रत्युत्पन्नमतिश्च ततः निष्क्रान्तौ।	यद्भविष्यस्य

प्रश्न 4. अधोलिखिताः उक्तयः केन कं प्रति उक्ताः?

	केन?	**कं प्रति?**
(क) अहो! बहुमत्स्योऽयं ह्रदः	....	....
(ख) तद् रात्रावपि गम्यतां निकटं सरः।	....	....
(ग) ममापि अभीष्टमेतत्। तदन्यत्र गम्यताम् इति।	....	....
(घ) अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितम्	....	....
(ङ) तन्न युक्तं साम्प्रतं क्षणमप्यत्र अवस्थातुम्।	....	....

उत्तरम्—

	केन?	**कं प्रति?**
(क) अहो! बहुमत्स्योऽयं ह्रदः	मत्स्यजीविभः	परस्परम्
(ख) तद् रात्रावपि गम्यतां निकटं सरः।	अनागतविधाता	मत्स्यान्
(ग) ममापि अभीष्टमेतत्। तदन्यत्र गम्यताम् इति।	प्रत्युत्पन्नमतिः	मत्सयान्
(घ) अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितम्	यद्भविष्यः	उभे अनागतविधाता प्रयुत्पन्नमतिमे च
(ङ) तन्न युक्तं साम्प्रतं क्षणमप्यत्र अवस्थातुम्।	अनागतविधाता	मत्स्यान्

प्रश्न 5. अधः प्रदत्तानां कथनानाम् उचितं मेलनं कुरुत—

'क' स्तम्भः	**'ख' स्तम्भः**
(*i*) किं वाङ्मात्रेणापि।	(क) कर्तव्यं प्रपलायनम्
(*ii*) तेन पश्यन्ति विद्वांसो	(ख) अन्यत्र गतानामपि मृत्युः भविष्यति एव।
(*iii*) तत् न युक्तं साम्प्रतं	(ग) पितृपैतामहिकम् एतत् सरः त्यक्तुं युज्यते।
(*iv*) अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितम्	(घ) अत्र समागत्य मत्स्यसंक्षयं करिष्यन्ति।
(*v*) तद् रात्रावपि गम्यतां	(ङ) क्षणमप्यत्र अवस्थातुम्।
(*vi*) तन्नूनं प्रभातसमये मत्स्यजीविनः	(च) किञ्चित् निकटं सरः।

(vii) अशक्तैर्बलिनः शत्रोः — (छ) देहभङ्गं कुलक्षयम्।

(viii) आयुःक्षयोऽस्ति चेत् — (ज) सुरक्षितं दैवहतं विनश्यति।

उत्तरम्—

'क' स्तम्भः	'ख' स्तम्भः
(i) किं वाङ्मात्रेणापि।	(ग) पितृपैतामहिकम् एतत् सरः त्यक्तुं युज्यते।
(ii) तेन पश्यन्ति विद्वांसो	(छ) देहभङ्गं कुलक्षयम्।
(iii) तत् न युक्तं साम्प्रतं	(ङ) क्षणमप्यत्र अवस्थातुम्।
(iv) अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितम्	(ज) सुरक्षितं दैवहतं विनश्यति।
(v) तद् रात्रावपि गम्यतां	(च) किञ्चित् निकटं सरः।
(vi) तन्नूनं प्रभातसमये मत्स्यजीविनः	(घ) अत्र समागत्य मत्स्यसंक्षयं करिष्यन्ति।
(vii) अशक्तैर्बलिनः शत्रोः	(क) कर्तव्यं प्रपलायनम्
(viii) आयुःक्षयोऽस्ति चेत्	(ख) अन्यत्र गतानामपि मृत्युः भविष्यति एव।

प्रश्न 6. पाठात् चित्वा समानार्थकपदानि लिखत—

(i) सरोवरे ....

(ii) प्रातः ....

(iii) वज्रपाततुल्यम् ....

(iv) रिपोः ....

(v) परिवारेण ....

(vi) कथितम् ....

(vii) श्रुत्वा ....

(viii) मरणम् ....

उत्तरम्—

(i) सरोवरे	जलाशये
(ii) प्रातः	प्रभाते
(iii) वज्रपाततुल्यम्	कुलिशपातोपमम्
(iv) रिपोः	शत्रोः
(v) परिवारेण	परिजनेन
(vi) कथितम्	उक्तम्
(vii) श्रुत्वा	समाकर्ण्य
(viii) मरणम्	मृत्युः

प्रश्न 7. मञ्जूषायां दत्तैः अव्ययपदैः अधोलिखितवाक्येषु रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत—

(क) द्वौ मत्स्यौ परिवारेण..................................निष्क्रान्तौ।

(ख) मत्स्यजीविनः प्रभाते.............................आगमिष्यन्ति।

(ग) ....गते अपि मृत्युः भविष्यति।

(घ) किं सर्वैः श्रुतम्..............सायं मत्स्यजीविभिः किम् उक्तम् इति।

(ङ) यस्य गतिः नास्ति, सः...............................गृहे स्थास्यति।

(च) यद्भविष्यः सरः त्यक्तवा...........................गच्छति।

(छ) प्रत्युत्पन्नमतिः अवदत्, मम.........................इदं मतम्।

(ज) यद्भविष्यः अवदत्, युवाम्.......................न वदथः।

मञ्जूषा

अद्य/सम्यक्/न/अपि/अन्यत्र/सह/एव/अत्र

उत्तरम्— (क) द्वौ मत्स्यौ परिवारेण **सह** निष्क्रान्तौ।

(ख) मत्स्यजीविनः प्रभाते **एव** आगमिष्यन्ति।

(ग) **अन्यत्र** गते अपि मृत्युः भविष्यति।

(घ) किं सर्वैः श्रुतम् **अद्य** सायं मत्स्यजीविभिः किम् उक्तम् इति।

(ङ) यस्य गतिः नास्ति, सः **अत्र** गृहे स्थास्यति।

(च) यद्भविष्यः सरः त्यक्तवा **न** गच्छति।

(छ) प्रत्युत्पन्नमतिः अवदत्, मम **अपि** इदं मतम्।

(ज) यद्भविष्यः अवदत्, युवाम् **सम्यक्** न वदथः।

प्रश्न 8. अधोदत्तानां विशेषणपदानां समुचितैः विशेष्यपदैः सह मेलनं कुरुत—

विशेषणपदानि	विशेष्यपदानि		
(*i*) सुखावहा	(क) सरः	(*v*) बलिनः	(ङ) मत्स्याः
(*ii*) त्रयः	(ख) वचः	(*vi*) कुलिशपातोपमम्	(च) गतिः
(*iii*) कस्मिंश्चित्	(ग) शत्रोः	(*vii*) बहुमत्स्यः	(छ) जलाशये
(*iv*) पितृ पैतामहिकं	(घ) ह्रदः		

उत्तरम्—

विशेषणपदानि	विशेष्यपदानि		
(*i*) सुखावहा	(च) गतिः	(*v*) बलिनः	(ग) शत्रोः
(*ii*) त्रयः	(ङ) मत्स्याः	(*vi*) कुलिशपातोपमम्	(ख) वचः
(*iii*) कस्मिंश्चित्	(छ) जलाशये	(*vii*) बहुमत्स्यः	(घ) ह्रदः
(*iv*) पितृ पैतामहिकं	(क) सरः		

प्रश्न 9. विलोमपदानि मेलयत—

पदानि	विलोमपदानि		
(*i*) रात्रौ	(क) शक्तैः	(*v*) शत्रोः	(ङ) प्रभाते
(*ii*) दूरे	(ख) निकटम्	(*vi*) विद्वांसः	(च) म्रियते
(*iii*) अशक्तैः	(ग) मित्रस्य	(*vii*) जीवति	(छ) अरिक्षतम्
(*iv*) सुरक्षितम्	(घ) मूर्खाः		

उत्तरम्—

पदानि	विलोमपदानि		
(*i*) रात्रौ	(ङ) प्रभाते	(*v*) शत्रोः	(ग) मित्रस्य
(*ii*) दूरे	(ख) निकटम्	(*vi*) विद्वांसः	(घ) मूर्खाः
(*iii*) अशक्तैः	(क) शक्तैः	(*vii*) जीवति	(च) म्रियते
(*iv*) सुरक्षितम्	(छ) अरिक्षतम्		

प्रश्न 10. उदाहरणानि अनुसृत्य वाक्यानाम् वाच्यपरिवर्तनं कुरुत—

	कर्तृवाच्यम्	कर्मवाच्यम्
उदाहरणानि	सः तिष्ठति	तेन स्थीयते।
	अहं चन्द्रं पश्यामि	मया चन्द्रः दृश्यते।
	त्वं माम् कथयसि।	त्वया अहं कथ्ये।

(क) गच्छन्तः मत्स्यजीविनः उक्तवन्तः। ....

(ख) वयम् इमं बहुमत्स्यं सरः न अन्विष्टवन्तः। ....

(ग) प्रभाते वयम् आगच्छेम। ....

(घ) भवन्तः श्रुतवन्तः यत् मत्स्यजीविनः अभिहितवन्तः। ....

(ङ) रात्रौ एव किञ्चित् निकटं सरः गच्छामः। ....

(च) अशक्ताः बलिनः शत्रोः पलायनं कुर्युः। ....

(छ) मत्स्यजीविनः तं जलाशयम् आलोड्य निर्मत्स्यतां नीतवन्तः। ....

(ज) भवन्तौ यत् प्रतिभाति तत् कुर्याताम्। ....

उत्तरम्— (क) गच्छद्भिः मत्स्यजीविभिः उक्तम्।

(ख) अस्माभिः इदं बहुमत्स्यं सरः न अन्वेषितम्।

(ग) प्रभाते अस्माभिः आगन्तव्यम्।

(घ) भवद्भिः श्रुतुम् यत् मत्स्यजीविभिः अभिहितम्।

(ङ) रात्रौ एव किञ्चित् निकटं सरः गम्यताम्।

(च) अशक्तैः बलिनः शत्रोः पलायनं कर्तव्यम्।

(छ) मत्स्यजीविभिः सः जलाशयः आलोड्य निर्मत्सयतां नीतः।

(ज) भवद्भ्याम् यत् प्रतिभायते तत् कुरूतम्।

प्रश्न 11. छात्राः गोलाकारे उपविशन्ति। ते एकैकं कृत्वा शुद्धक्रमेण कथां पूरयन्ति।

क्रमरहितानि वाक्यनि

(*i*) मत्स्यजीविनः जलाशयं निर्मत्स्यं कृतवन्तः।

(*ii*) एकस्मिन् जलाशये त्रयः मत्स्याः निवसन्ति स्म।

(*iii*) अनागतविधाता सर्वान् मत्स्यान् आहूय तत् सरः त्यक्तुम् उपादिशत्।

(*iv*) यद्भविष्यः भविष्यम् आश्रित्य तत्रैव अतिष्ठत्।

(*v*) प्रत्युत्पन्नमतिः अनागतविधात्रा सह सपरिवारं ह्रदं त्यक्तवा अन्यं ह्रदं गच्छति।

(*vi*) प्रत्युत्पन्नमतिः अनागतविधातुः उपदेशं स्वीकरोति।

(*vii*) यद्भविष्यः भविष्यम् आश्रित्यं मृत्युं प्राप्तवान्।

उत्तरम्— (*i*) एकस्मिन् जलाशये त्रयः मत्स्याः निवसन्ति स्म।

(*ii*) अनागतविधाता सर्वान् मत्स्यान् आहूय तत् सरः त्यक्तुम् उपादिशत्।

(*iii*) प्रत्युत्पन्नमतिः अनागतविधातुः उपदेशं स्वीकरोति।

(*iv*) प्रत्युत्पन्नमतिः अनागतविधात्रा सह सपरिवारं ह्रदं त्यक्तवा अन्यं ह्रदं गच्छति।

(*v*) यद्भविष्यः भविष्यम् आश्रित्य तत्रैव कृतवन्तः।

(*vi*) मत्स्यजीविनः जलाशयं निर्मत्स्यं कृतवन्तः।

(*vii*) यद्भविष्यः भविष्यम् आश्रित्य मृत्युं प्राप्तवान्।

प्रश्न 12. अधोलिखितभावार्थान् उचित पदैः पूरयत—

(क) ये जनाः..........भवन्ति तेषं कृते ततः पलायनम् एव..........अस्ति, अथवा ते ततः..............स्थानं गच्छेयुः। अन्यः कोऽपि..........न अस्ति।

(ख) येषां जनानां कृते............स्थानं विद्यते ते.............देहस्य नाशं अथवा...........विनाशं न पश्यन्ति।

(ग) भाग्यवशात् यः..........सः सुरक्षायाः उपायं विना अपि...............। यस्य भाग्ये जीवनं नास्ति सः तु.............अपि मृत्युं प्राप्नोति। अनाथः तु................त्यंक्तः अपि जीवति।

सहायकपदानि

वने, विद्वांसः, निर्बलाः, सुरक्षितं, कुलस्य, रक्षितः, उपायः, मार्गः, जीवति, सम्यक्रक्षितः, अन्यत्।

उत्तरम्— (क) ये जनाः **निर्बलाः** भवन्ति तेषं कृते ततः पलायनम् एव **मार्गः** अस्ति, अथवा ते ततः **अन्यत्** स्थानं गच्छेयुः। अन्यः कोऽपि **उपायः** न अस्ति।

(ख) येषां जनानां कृते **सुरक्षितं** स्थानं विद्यते ते **विद्वांसः** देहस्य नाशम् अथवा **कुलस्य** विनाशं न पश्यन्ति।

(ग) भाग्यवशात् यः **सुरक्षितं** सः सुरक्षायाः उपायं विना अपि **सम्यक्रक्षितः**। यस्य भाग्ये जीवनं नास्ति सः तु **रक्षितः** अपि मृत्युं प्राप्नोति। अनाथः तु **वने** त्यक्तः अपि जीवति।

प्रश्न 13. पाठात् चित्वा उचितां पंक्तिं लिखत—

(क) दैवे प्रतिकूले यत्नाः विफलाः जायन्ते।

(ख) समशक्तिभिः एव युद्धं कर्तव्यम्।

(ग) पुरुषार्थं विना भाग्यं न फलति।

उत्तरम्— (क) सुरक्षितं दैवहतं विनश्यति।

(ख) अशक्तैर्बलिनः शक्तोः कर्तव्यं प्रपलायनम्।

(ग) विद्यमाना गतिः येषामन्यत्रामि सुखावहा। तेन न पश्यन्ति विद्वांसो देहभङ्ग कुलक्षयम्। जीवने दूरदृष्टिं विना सफलता न लभ्यते।

पाठविकासः

क. लेखकग्रन्थपरिचयः

एषा कथा पञ्चतन्त्र-नाम्नः नीतिकथा-ग्रन्थात् सङ्कलिताऽस्ति। अस्य रचयिता श्री विष्णुशर्मा। राज्ञः अमरशक्तेः शास्त्र-विमुखान् त्रीन् अज्ञान् राजपुत्रान् व्यवहारे नीतौ च प्रवीणान् विधातुं विष्णुशर्मणा पञ्चतन्त्रस्य रचना कृता। तन्त्राणां नामानि सन्ति- 1. मित्रभेदः, 2. मित्रसम्प्राप्तिः, 3. लब्ध-प्रणाशः, 4. काकोलूकीयम्, 5. अपरीक्षितकारकम् च।

प्रथमतन्त्रस्य मित्रभेदस्य एषा कथा मनोरञ्जनी शिक्षाप्रदा च। एषा कथा दैवापेक्षया पुरुषार्थस्य श्रेष्ठतां साधयति।

यह कथा 'पञ्चतन्त्र' नामक नीतिकथापरक ग्रन्थ से संकलित की गई हैं इस ग्रन्थ के रचयिता हैं—श्री विष्णुशर्मा। राजा अमर शक्ति के शास्त्रविमुख, राजनीति से अनजान तीन राजकुमारों को व्यवहार तथा नीति में प्रवीण बनाने के लिए विष्णुशर्मा ने पञ्चतन्त्र की रचना की। पाँच तन्त्रों के नाम हैं—(1) मित्रभेदः (2) मित्र सम्प्राप्तिः (3) लब्ध-प्रणाशः (4) काकोलू- कीयम् (5) अपरीक्षितकारकम्।

प्रथमतन्त्र मित्रभेद से ली गई यह कथा रोचक एवं शिक्षाप्रद है। यह कथा दैव (भाग्य) की अपेक्षा पुरुषार्थ के महत्व पर प्रकाश डालती है।

ख. भाषा विकासः

कृत्-प्रत्ययाः अव्ययार्थकाः।

ये प्रत्ययाः धातुभिः सह योज्यन्ते, ते कृत् प्रत्ययाः कथ्यन्ते। कृत्-प्रत्यय-योगेन संज्ञा-विशेषण-अव्ययपदानां रचना भवति। क्तवा तथा सोपसर्गल्यप् प्रत्ययौ अव्यय-सदृशौ स्तः।

यस्मिन् वाक्ये एका क्रिया प्रथमाभवति, द्वितीया पश्चात् प्रारभते, तत्र क्त्वा अथवा ल्यप् प्रयोगः भवति। यथा

छात्रः पठति, छात्रः लिखति।

अत्र पठन-क्रियायाः अनन्तरं लेखनक्रिया प्रारभते, अतः क्त्वा प्रत्ययः एवं योज्यते-

छात्रः पठित्वा लिखति।

ल्यप् (य) प्रत्ययः अपि क्त्वा-प्रत्ययस्य अर्थे प्रयुज्यते। धातोः पूर्वम् उपसर्गे योजिते ल्यप्-प्रत्यययोगः भवति। यथा वि + धा + ल्यप् = विधाय।

उदाहरणानि

क्तवा-अन्तपदानि	**ल्यप्-अन्तपदानि**
लिख् + क्त्वा = लिखित्वा।	प्र + पठ् + ल्यप् = प्रपठ्य।
वच् + क्त्वा = उक्त्वा।	वि + धा + ल्यप् = विधाय।

वद् + क्त्वा = उदित्वा।	निर् + गम् + ल्यप् = निर्गत्य।
गम् + क्त्वा = गत्वा।	वि + हृ + ल्यप् = विहृत्य।
नम् + क्त्वा = नत्वा।	आ + गम् + ल्यप् = आगत्य।
नी + क्त्वा = नीत्वा।	आ + नी + ल्यप् = आनीय।
पा + क्त्वा = पीत्वा।	नि + पा + ल्यप् = निपीय।

तुमुन्-प्रत्ययः

एकां क्रियां सम्पादयितुं यत्र अन्या क्रिया क्रियते, तत्र भविष्यत्-अर्थं सूचयितुं तुमुन् प्रत्ययः धातुना सह योज्यते। यथा-

बालकः उत्सवं द्रष्टुं गच्छति। अस्मिन् वाक्ये उत्सवस्य दर्शनाय गमनक्रिया भवति। अतः तुमुन् प्रत्ययः धातुना सह योजितोऽस्ति।

उदाहरणानि

क. छात्राः पठितुम् (पठ् + तुमुन्) गच्छन्ति।

ख. किं त्वं धावितुम् (धाव् + तुमुन्) उद्यतः असि?

ग. बालिकाः नृत्यं कर्तुम् (कृ + तुमुन्) मञ्चं प्रविशन्ति।

घ. व्यापारी धनम् अर्जितुम् (अर्ज् + तुमुन्) यत्नं करोति।

ङ अहं खाद्यसामग्रीम् आनेतुम् (आ + नी + तुमुन्) आपणं गच्छामि।

भावविकासः

उद्यमः

न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः। ऋ. 4.33.11

जो अच्छे कार्य में थक गया है देवता उससे मैत्री नहीं करते।

स्वेनैव व्यवसायेन धन्या जीवन्ति जन्तवः। ब्रह्म पु. 160.9.10

अपने व्यवसाय से ही जन्तु धन्य होकर जीवनयापन करते हैं।

उद्यमो मित्रवत् ग्राह्यः प्रमादं शत्रुवत् त्यजेत्। बुद्धचरितम् 26.73

उद्यम को मित्र के समान स्वीकार करे तथा आलस्य का शत्रु के समान परित्याग कर देवे।

दुर्लभान्यपि कार्याणि सिध्यन्ति प्रोद्यमेन वे। बुद्धचरितम् 26.63

परिश्रम से दुर्लभ काम भी सिद्ध हो जाते हैं।

कर्मैव हि कर्तव्यं नास्ति सिद्धिरकर्मणः। महाभारत. अनु. 10.26

कर्म करना ही चाहिए बिना कर्म किए बिना सफलता नहीं होती।

पदानुशीलनी

अनागतविधाता, (सं.)	(अनागतस्य विधाता; ष. तु. पु.)	अनागतस्य भयस्य प्रतिकर्ता; संकट आने से पहले प्रतिकार करने वाला, Prudent
प्रत्युत्पन्नमतिः (सं.)	(प्रत्युत्पन्ना मतिः यस्य सः, ब. व्री.)	प्रतिकर्तुं तत्परः; तत्परता से उपाय करने वाला; one quick in action.
यद्भविष्यः (सं.)	भविष्यं प्रति निश्चिन्तः	भविष्य के प्रति निश्चिन्त; भाग्यभरोसे; one who depends upon fate.
गच्छद्भिः (वि.)	(गम् + शतृ, तृ. ब. व.)	व्रजद्भिः; जाते हुए; while going.
मत्स्यजीविभिः (सं.)	(मत्स्यैः जीवन्ति, तैः)	मत्स्याजीवैः; मछुआरों से; by the fishermen.
बहुमत्स्यः (वि.)	(बहवः मत्स्याः यस्मिन् सः)	प्रभूतमीनः; बहुत मछलियों वाला; one full of fish (tank).

ह्रदः (सं.)	(ह्रद पुं. प्रथमा एकवचनम्)	कासारः, तालाब; तडागः; Pond.
अन्वेषितः (वि.)	(अनु + आ + इष् णिच् क्त)	गवेषितः विलोकितः; देखा गया; has been found.
आहारवृत्तिः (सं.)	(आहारस्य वृत्तिः, ष. त. पु.)	भोजनप्रबन्धः; भोजन की व्यवस्था; arrangement of the meals.
संवृत्तः (वि.)	(सम् वृत् + क्त, प्रथमा ए.व.)	संजातः; हो गया; has been done.
कुलिशपातोपमम् (वि.)	(कुलिशस्य पातेन उपमा यस्य तत् ब. व्री.)	वज्रपातसमानम्; वज्रपात के समान; like the fall of thunder.
वचः (सं.)	(वचस्, द्वि. ए. व.)	कथनम्; वचन; saying, words.
समाकर्ण्य (अ.)	(सम् + आ + कर्ण् + ल्यप्)	श्रुत्वा; सुनकर; having listened to.
आहूय (अ.)	(आ + ह्वे + ल्यप्)	आकार्य; बुलाकर; having called.
अभिहितम् (वि.)	(अभि + धा + क्त; प्रथमा ए. व.)	कथितम्; कहा गया; said
गम्यताम् (क्रि.)	(गम् + यक् लोट् प्रथम पु. ए. व.)	प्रस्थीयताम्; जाइए; Please go.
अशक्तैः (वि.)	(न शक्तैः, शक् + क्त; तृ.ब.व.)	असमर्थैः; असमर्थ के द्वारा; by the incapables.
प्रपलायनम् (सं.)	(प्र + परा + अय् ल्युट्; प्र. ए. व.)	अपसरणम्; भाग जाना; running away.
आश्रितव्यः (वि.)	(आ + श्रि + तव्य; प्र. ए. व.)	श्रयणीयः; आश्रय लेना चाहिए; should take shelter.
मत्स्यसंक्षयम् (सं.)	(मत्स्यानां संक्षयः, तम् ष. त. पु.)	मत्स्यानां विनाशम्; मछलियों का विनाश; destruction of the fish.
साम्प्रतम् (अ.)		इदानीम्; अब; Now.
सुखावहा (वि.)	(सुखम् आवहति उपपद त. पु.)	सुखदायिनी; सुख देने वाली; one giving comfort.
देहभङ्गम् (सं.)	(देहस्य भङ्गः, तम् ष. त. पु.)	देहविनाशम्; शरीर का नाश; destruction of the body.
अभीष्टम् (वि.)	(अभि + इष् + क्त)	अभिवांछितम्; मनचाहा; desired.
सम्यक् (अ.)		सुष्ठु; अच्छी तरह; keenly.
मन्त्रितम् (वि.)	(मन्त्र् + क्त)	विमृष्टम्; विचार किया गया considered.
वाङ्मात्रेण (सं.)	(वाचः मात्रेण, ष. तत्पु.)	कथनमात्रेण; कहने भर से; only by saying.
पितृपैतामहिकम् (वि.)	(पितृपितामह + ठक्)	पितृपितामहपरम्पराप्राप्तम्; बापदादा की सम्पत्ति; ancestral.
क्षयः (सं.)	(क्षि + अच्; प्र. ए. व.)	विनाशः; विनाश; destruction.
अरक्षितम् (वि.)	(न रक्षितम्, नञ् त. पु.)	न रक्षितम्; न रक्षा किया हुआ unprotected.
दैवहतम् (वि.)	(दैवेन हतम्; तृ. त. पु.)	दुर्भाग्येन विनाशितम्; भाग्य का मारा; forsaken by fate.
कृतप्रयत्नः (वि.)	(कृत; प्रयत्नः येन सः)	कृतप्रयासः; यत्न करने पर भी; one who has put in efforts.
परिजनेन (सं.)	(परिजन तृ. ए. व.)	बन्धुजनेन; बन्धुओं से; with relatives.
आलोड्य (अ.)	(आ लुड् + ल्यप्)	अवगाहनं कृत्वा; अवगाहन करके; पानी को मथ कर, having searched into the water.
निर्मत्स्यतां नीतम् (क्रि.)	(निर् मत्स्य + तल्)	मत्स्यहीनः कृतः; बिना मछली वाला बना दिया; was rendered without fish.